Date
20/04/2020

Subject - Gender, School and Society

B.Ed. 2nd year

किशोरावस्था के दौरान लिंग का सामाजिक निर्माण

किशोरावस्था को (Teenage) की अवस्था भी कहा जाता है। जिसके अन्तर्गत 13-19 की उम्र को लिया जाता है। स्टेनले हॉल ने "किशोरावस्था को तूफान की अवस्था कहा है"। किशोरावस्था के दौरान किशोरों एवं किशोरियों को अपने शरीर के विकास के कारण, स्त्री और पुरुष के शारीरिक लक्षण दिखने लगते हैं। तथा उनको लड़का-लड़की न समझकर युवक और युवती के रूप में देखा जाने लगता है। वे स्वयं भी अपने आप को इस रूप में मानने लगते हैं।

इसी समय उनको अपनी लैंगिक भूमिकाओं का पता लगने लगता है क्योंकि बड़े होने के कारण अब उनसे समाज की अपेक्षा बढ़ने लगती है। इसी समय लैंगिकता की सामाजिक रचना तीव्र गति के साथ होती है।

किशोरावस्था की विशेषताएँ :-

1. शारीरिक विशेषताएँ एवं परिवर्तन और लैंगिक सामाजिक रचना में इनकी भूमिका :- किशोरावस्था में किशोर एवं किशोरियों के आवाज में परिवर्तन आने लगता है। शारीरिक अंगों में परिवर्तन होने लगता है। लड़कों की दाढ़ी-मूँछ आने लगती है। लड़कियों को मासिक धर्म भी आना प्रारम्भ हो जाता है।

20-04-2020 10:54

इन सभी शारीरिक परिवर्तनों के बीच किशोर एवं किशोरियों में स्त्रीत्व एवं पुरुषत्व का आभास होने लगता है एवं उनको अपनी भूमिका भी स्पष्ट होने लगती है।

2. संवेगात्मक विकास एवं इसकी लैंगिक सामाजिक रचना में भूमिका :-

इस अवस्था में किशोरों के अंगों में कई प्रकार के संवेगों का भी विकास होने लगता है। जिसमें प्यार, गुस्सा, ईर्ष्या की मात्रा बढ़ जाती है। लैंगिक रूप से किशोर एवं किशोरियाँ एक दूसरे को आकर्षित करते हैं एवं एक-दूसरे के प्रति संवेगात्मक लगाव भी होने लगता है। संवेगात्मक स्थिरता का भयंकर तूफान उमड़ने के कारण वे बड़ी जल्दी दुखी एवं तनाव में आ जाते हैं। इसी समय उनमें एक-दूसरे से संवेगात्मक लगाव का दौर शुरू हो जाता है। समाज का हस्तक्षेप और किशोर-किशोरियों में परिपक्वता की अपेक्षा के कारण हर न मिलने के कारण उनमें संवेगात्मक विस्फोट भी होने लगता है। इस काल में लैंगिक सामाजिक रचना कम तीव्र गति से चल पड़ता है।

3. सामाजिक विकास और लैंगिक सामाजिक रचना :-

इसी समय प्रत्येक लिंग की अपनी-अपनी विशेषताएँ विकसित होने लगती हैं और उनमें समाज की उसकी लैंगिक भूमिका के प्रति आकांक्षाओं और उसका अपना 'स्व' का विकास, दोनों में टकराहट की स्थिति आ जाती है। समाज प्रदत्त भूमिकाओं की युवक और युवतियाँ दोनों ही आलोचना करते हैं और अधिक आजादी की माँग करते हैं। स्त्री लिंग भी आदर्श भूमिका की अपेक्षा को अपने प्रति भेदभाव इसी अवस्था में समझती है।

20-04-2020 10:55

लैंगिकता विकास में प्राथमिक शिक्षा की भूमिका है।

बालकों में लैंगिक विकास के कार्य में प्राथमिक शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। जो निम्नलिखित है।

(1) प्राथमिक स्तर पर लैंगिकता के विकास के लिए सह-शिक्षा की व्यवस्था की जाती है।

(2) प्रा० स्तर पर व्यापक शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण लैंगिकता की व्यापकता के लिए किया जाता है।

(3) स्वस्थ लैंगिक दृष्टिकोण के विकास के लिए प्रा० स्तर पर रोचक पाठ्यक्रम एवं लिंगीय समानता को प्रदर्शित करने वाले चित्रों का प्रयोग किया जाता है।

(4) उत्तम कार्य करने के लिए बालक एवं बालिकाओं को को विद्यालय में प्रोत्साहित किया जाता है जिससे पुरुष प्रधानता का मिथक टूटता है।

(5) लैंगिकता के विकास के लिए विविध प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है।

(6) विद्यालय में शिक्षकों के द्वारा बालक एवं बालिकाओं के प्रति अभेद-पूर्ण व्यवहार के द्वारा ही लैंगिक शिक्षा सकारात्मक दिशा की ओर आगे बढ़ती है।

Complete

Pidhi Tyagi

20-04-2020 10:55